Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2019 SHISRRJ | Volume 2 | Issue 5 | ISSN : 2581- 6306

क्षेत्र के आधार पर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की सामाजिक परिपक्वता का अध्ययन

प्रो0 (डॉ0) पार्थसारथी पाण्डेय
शोध निर्देशक,असिस्टेण्ट प्रोफेसर,
शिक्षक–शिक्षा विभाग,
नेहरू ग्राम भारती (मानित विश्वविद्यालय),
प्रयागराज (उत्तर प्रदेश)

नरेन्द्र तिवारी
शोधछात्र (शिक्षाशास्त्र)
शिक्षक–शिक्षा विभाग
नेहरू ग्राम भारती (मानित विश्वविद्यालय),
प्रयागराज (उत्तर प्रदेश)

सारांश– प्रस्तुत समस्या कथन क्षेत्र के आधार पर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की सामाजिक परिपक्वता का अध्ययन करना है। प्रस्तुत अध्ययन में वर्णनात्मक अनुसंधाान के अन्तर्गत सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। जनसंख्या के रूप में प्रयागराज जनपद के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्र–छात्राओं का जनसंख्या माना गया है। अध्ययन हेतु यादृच्छिक न्यादर्श विधि का चयन किया गया है। शोधकर्त्ता द्वारा जौनपुर जनपद में स्थित 4 माध्यमिक विद्यालयों का चयन कर 200 छात्र–छात्राओं का चयन यादृच्छिक विधि द्वारा चयन गया है। विद्यार्थियों के सामाजिक परिपक्वता को मापने के लिए प्रस्तुत अध्ययन में सामाजिक परिपक्वता के मापन हेतु डॉ. आर.पी. श्रीवास्तव द्वारा निर्मित एवं मानकीकृत सामाजिक परिपक्वता मापनी का प्रयोग किया गया इस परीक्षण में सामाजिक परिपक्वता के तीन आयामों एवं तत्वों के आधार पर 90 प्र नों का चयन किया गया है। आँकड़ों के विश्लेषण हेतु टी–अनुपात सांख्यिकी विधि का प्रयोग किया गया है। क्षेत्र के आधार पर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के सामाजिक परिपक्वता में अन्तर नहीं पाया गया। इसका कारण यह हो सकता है कि माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थी किशोरावस्था में होते हैं और वे समाज में अपनी भूमिका बनाने की कोशिश करते हैं।

मुख्य शब्द– माध्यमिक स्तर, छात्र–छात्राएँ, सामाजिक परिपक्वता, तुलना

प्रस्तावना – मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। वह समाज में जन्म लेता है और धीरे–धीरे समाज में बड़ा होकर सामाजिक नियमों को ग्रहण करके वह समाज का सदस्य बन जाता है। समाज में वह प्रेम, मिठास, ईर्ष्या, द्वेष, सुख–दुख का अनुभव करता है। समाज में उसे इन समस्याओं से इतर भी अन्य अनेक प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ता है तथा इसके अतिरिक्त मनुष्य सामाजिक अनुकूलताओं और प्रतिकूलताओं से गुजरते हुए अपने भावी भविष्य के तरफ तत्परता से आगे बढ़ता जाता है। इस संसार में जो व्यक्ति अपने आप को सुख–दुःख में सामान्य रूप से स्थापित कर लेता है वही सच्चा व सफल व्यक्ति माना जाता है।

मनुष्य के जीवन में वातावरण का विशेष प्रभाव होता है। मनोविज्ञान के अनुसार मानव के विकास में जितना आनुवांशिकता का योगदान होता है। उतना ही योगदान विकास में वातावरण का होता है क्योंकि मनुष्य जब जन्म लेता है और वह वातावरण के सम्पर्क में आता है तो वह विकास के साथ–साथ अपने

आस–पास के वातावरण से बहुत कुछ सीखता है। मनुष्य जब जन्म लेता है तो न हीं उसकी कोई जाति होती है और न ही उनका कोई धर्म होता है जाति तथा धर्म का तमगा उसे परिवार तथा समाज द्वारा प्रदान किया जा सकता है। बालक शैशवावस्था से ही समाज तथा अपने परिवेश से अनेक आदतों को सीखता है। जो उसकी आदतों तथा विचारों में परिवर्तित हो जाती है। शैशवावस्था के बाद बालक बाल्यावस्था में प्रवेश करता है। तथा वह घर से विद्यालय की तरफ अग्रसर होकर समाज के पूर्ण सम्पर्क में आता है तथा समाज के द्वारा बनाये नियमों तथा विचारों का सामना करता है। बाल्यावस्था के बाद एक सबसे कठिन अवस्था का आगमन होता है, वह अवस्था किशोरावस्था है यह अवस्था अत्यंत संवेदनशील होती है। इस अवस्था में बालक को जैसा समाज मिलता है वह उसी धारा की तरफ मुड़ जाता है। इस अवस्था में बालक समाज के प्रति ज्यादा संवेदनशील होता है इस अवस्था के बाद बालक तथा बालिकाओं में सबसे उमंग की अवस्था का आगमन होता है जिसे किशोरावस्था कहते हैं। इस अवस्था में अधिक सामाजिक एवं धार्मिक होने के कारण इन नवयुवकों का उनके समाज के प्रति दृष्टिकोण तथा धार्मिक प्रवृत्ति का अंकन हो जाता है।

विकास एक बहुमुखी प्रक्रिया है इसमें बहुत सी बातों का समावे ा होता है। विकास के क्रम के बालक का बौद्धिक पक्ष ही नहीं भाारीरिक, मानसिक, सामाजिक तथा संवेगात्मक पक्ष भी महत्वपूर्ण है। विकास के यह सभी पक्ष परस्पर सम्बन्धित हैं। परिपक्वता की ओर अग्रसर और विकास करता हुआ बालक न केवल भाारीरिक बौद्धिक और संवेगात्मक व्यवहार में बल्कि सामाजिक रूप से भी उन्नति करता है। सामाजिक विकास के फलस्वरूप उसे सामाजिकता की थाती प्राप्त होती है। समाजिकता व्यक्ति के व्यवहार को सकारात्मक एवं नकारात्मक स्वीकृत के साथ अदल–बदल कर प्रस्तुत करने की प्रक्रिया है। जो कुछ चीजों को स्वीकृत एवं कुछ अन्य चीजों की अस्वीकृत को आगे ले जाती है। यह व्यक्ति के व्यक्तित्व पर सामाजिक समूह, औपचारिकता, अनौपचारिकता के प्रभाव को महत्व देता है।

सामाजिक परिपक्वता का तात्पर्य लाभ या सामाजिक अपेक्षानुसार बर्ताव करने की योग्यता से है। इसको इस प्रकार प्रभावित किया गया है, ''वह प्रक्रिया जिसके द्वारा वृहद श्रेणी के साथ जन्मा व्यक्ति वास्तविक बर्ताव का मार्ग दिखलाता है जो कि बहुत ही सकरी श्रेणी के अन्दर सीमित है। वह श्रेणी जो व्यक्ति के समुदाय के आद ार्शों के अनुसार इसके लिए प्रथागत और स्वीकार करने के योग्य है।''

हरलॉक के मतानुसार ''सामाजिक उन्नति का तात्पर्य सामाजिक सम्बन्धों में परिपक्वता का प्राप्त करना है। जिसका अर्थ समूह के आद ार्शों नैतिकता एवं परम्पराओं के अनुकूल बनाने की प्रक्रिया को सीखना है। और एकता के विचार अन्तः संचार और सहयोग को मन में रखना है। यह बर्ताव के नये तरीकों की उन्नति रुचि में बदलाव और नये मित्रों के चुनाव को भाामिल करता है। सामाजिक व्यक्ति वह जो न केवल लोगों के साथ रहता है बल्कि उनके साथ कार्य करना चाहता है।''

सामाजिक परिपक्वता का अर्थ है, समाज के मूल्यों, नियमों, अभिवृत्तियों, सामाजिक व्यवहार और सामाजिक भूमिका में परिपक्वता प्राप्त करना। उपरोक्त गुण किसी कि ाोर में समाज की प्रत्या ााओं के अनुसार विकसित हुए हैं तो वह कि ाोर समाज की दृश्टि में पूर्णरूपेण सामाजिक रूप से परिपक्व माना जायेगा। सामाजिक परिपक्वता के कारण वह कि ाोर समाजिक मूल्यों, नियमों और भूमिका आदि में निश्ठा ही नहीं रखता है बल्कि वह इन्हीं के आधार पर समूह में व्यवहार करता है। ऐसे कि ाोर सामाजिक गतिविधियों में रूचि लेते हुए सन्तोश व प्रसन्नता का अनुभव करते हैं।

समस्या कथन–

क्षेत्र के आधार पर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की सामाजिक परिपक्वता का अध्ययन।

अध्ययन का उद्देश्य

प्रस्तुत अध्ययन में निम्नलिखित उद्देश्यों का अध्ययन किया गया है–

1. माध्यमिक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों की सामाजिक परिपक्वता का अध्ययन करना।

2. माध्यमिक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के छात्रों की सामाजिक परिपक्वता का अध्ययन करना।
3. माध्यमिक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के छात्राओं की सामाजिक परिपक्वता का अध्ययन करना।
4. माध्यमिक स्तर के शहरी क्षेत्र के छात्र एवं छात्राओं की सामाजिक परिपक्वता का अध्ययन करना।
5. माध्यमिक स्तर के ग्रामीण क्षेत्र के छात्र एवं छात्राओं की सामाजिक परिपक्वता का अध्ययन करना।

परिकल्पनाएँ–

1. माध्यमिक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों की सामाजिक परिपक्वता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2. माध्यमिक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के छात्रों की सामाजिक परिपक्वता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
3. माध्यमिक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के छात्राओं की सामाजिक परिपक्वता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
4. माध्यमिक स्तर के शहरी क्षेत्र के छात्र एवं छात्राओं की सामाजिक परिपक्वता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
5. माध्यमिक स्तर के ग्रामीण क्षेत्र के छात्र एवं छात्राओं की सामाजिक परिपक्वता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

शोध–प्रविधि

प्रस्तुत अध्ययन में वर्णनात्मक अनुसंधाान के अन्तर्गत सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। जनसंख्या के रूप में प्रयागराज जनपद के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्र–छात्राओं का जनसंख्या माना गया है। अध्ययन हेतु यादृच्छिक न्यादर्श विधि का चयन किया गया है। शोधकर्त्ता द्वारा जौनपुर जनपद में स्थित 4 माध्यमिक विद्यालयों का चयन कर 200 छात्र–छात्राओं का चयन यादृच्छिक विधि द्वारा चयन गया है। विद्यार्थियों के सामाजिक परिपक्वता को मापने के लिए प्रस्तुत अध्ययन में सामाजिक परिपक्वता के मापन हेतु डॉ. आर.पी. श्रीवास्तव द्वारा निर्मित एवं मानकीकृत सामाजिक परिपक्वता मापनी का प्रयोग किया गया इस परीक्षण में सामाजिक परिपक्वता के तीन आयामों एवं तत्वों के आधार पर 90 प्र नों का चयन किया गया है। आँकड़ों के विश्लेषण हेतु टी–अनुपात सांख्यिकी विधि का प्रयोग किया गया है।

प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या–

1. माध्यमिक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों की सामाजिक परिपक्वता का अध्ययन–

H_{01} माध्यमिक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों की सामाजिक परिपक्वता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

सारणी सं0 1

माध्यमिक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों की सामाजिक परिपक्वता का मध्यमान, मानक विचलन, मानक त्रुटि एवं क्रान्तिक–अनुपात

क्र. सं.	क्षेत्र	संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (S.D.)	मानक त्रुटि (SE_m)	मध्यमानों का अन्तर (D)	क्रान्तिक अनुपात मान (C.R.)	सार्थकता स्तर एवं सारिणी मान
1.	शहरी	100	207.31	24.35	3.70	3.63	0.98	0.05 सार्थक नहीं
2.	ग्रामीण	100	203.68	27.84				

अवकलित CR का मान = 0.98

98 आवृत्ति अंश (*df*) पर 0.05 सार्थकता स्तर का सारणी मान–1.98

उपर्युक्त सारणी के अवलोकन से स्पष्ट है कि CR का परिगणित मान 0.98 है, जो कि क्रान्तिक अनुपात के द्विपुच्छीय परीक्षण के लिए 0.05 सार्थकता स्तर के सारणीय मान 1.98 से कम है। तथा 0.05 सार्थकता स्तर पर भी CR का परिगणित मान असार्थक है। अतः शून्य परिकल्पना (H_{01}) स्वीकृत की जाती है। इस प्रकार सारणी मान से स्पष्ट है कि माध्यमिक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों की सामाजिक परिपक्वता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। परिणामतः कहा जा सकता है कि माध्यमिक स्तर पर शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों में सामाजिक परिपक्वता में समानता है।

2. माध्यमिक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के छात्रों की सामाजिक परिपक्वता का अध्ययन–

H_{02} माध्यमिक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के छात्रों की सामाजिक परिपक्वता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

सारणी सं0 2

माध्यमिक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के छात्रों की सामाजिक परिपक्वता का मध्यमान, मानक विचलन, मानक त्रुटि एवं क्रान्तिक–अनुपात

क्र. सं.	क्षेत्र	संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (S.D.)	मानक त्रुटि (SE_m)	मध्यमानों का अन्तर (D)	क्रान्तिक अनुपात मान (C.R.)	सार्थकता स्तर एवं सारिणी मान
1.	शहरी	50	203.68	23.63	5.75	1.78	0.31	0.05 सार्थक नहीं
2.	ग्रामीण	50	205.46	33.08				

अवकलित CR का मान = 0.31

48 आवृत्ति अंश (*df*) पर 0.05 सार्थकता स्तर का सारणी मान–2.01

उपर्युक्त सारणी के अवलोकन से स्पष्ट है कि CR का परिगणित मान 0.31 है, जो कि क्रान्तिक अनुपात के द्विपुच्छीय परीक्षण के लिए 0.05 सार्थकता स्तर के सारणीय मान 2.01 से कम है। तथा 0.05 सार्थकता स्तर पर भी CR का परिगणित मान असार्थक है। अतः शून्य परिकल्पना (H_{02}) स्वीकृत की जाती है। इस प्रकार सारणी मान से स्पष्ट है कि माध्यमिक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के छात्रों की सामाजिक परिपक्वता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। परिणामतः कहा जा सकता है कि माध्यमिक स्तर पर शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के छात्रों में सामाजिक परिपक्वता में समानता है।

3. माध्यमिक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के छात्राओं की सामाजिक परिपक्वता का अध्ययन–

H_{03} माध्यमिक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के छात्राओं की सामाजिक परिपक्वता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

सारणी सं0 3

माध्यमिक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के छात्राओं की सामाजिक परिपक्वता का मध्यमान, मानक विचलन, मानक त्रुटि एवं क्रान्तिक–अनुपात

क्र. सं.	क्षेत्र	संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (S.D.)	मानक त्रुटि (SE_m)	मध्यमानों का अन्तर (D)	क्रान्तिक अनुपात मान (C.R.)	सार्थकता स्तर एवं सारिणी मान

1.	शहरी	50	210.94	24.76	4.64	9.04	1.94	0.05 सार्थक नहीं
2.	ग्रामीण	50	201.90	21.57				

अवकलित CR का मान = 1.94

48 आवृत्ति अंश (*df*) पर 0.05 सार्थकता स्तर का सारणी मान–2.01

उपर्युक्त सारणी के अवलोकन से स्पष्ट है कि CR का परिगणित मान 1.94 है, जो कि क्रान्तिक अनुपात के द्विपुच्छीय परीक्षण के लिए 0.05 सार्थकता स्तर के सारणीय मान 2.01 से कम है। तथा 0.05 सार्थकता स्तर पर भी CR का परिगणित मान असार्थक है। अतः शून्य परिकल्पना (H_{03}) स्वीकृत की जाती है। इस प्रकार सारणी मान से स्पष्ट है कि माध्यमिक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के छात्राओं की सामाजिक परिपक्वता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। परिणामतः कहा जा सकता है कि माध्यमिक स्तर पर शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के छात्राओं में सामाजिक परिपक्वता में समानता है।

4. माध्यमिक स्तर के शहरी क्षेत्र के छात्र–छात्राओं की सामाजिक परिपक्वता का अध्ययन–

H_{04} माध्यमिक स्तर के शहरी क्षेत्र के छात्र–छात्राओं की सामाजिक परिपक्वता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

सारणी सं0 4

माध्यमिक स्तर के शहरी क्षेत्र के छात्र–छात्राओं की सामाजिक परिपक्वता का मध्यमान, मानक विचलन, मानक त्रुटि एवं क्रान्तिक–अनुपात

क्र. सं.	लिंग	संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (S.D.)	मानक त्रुटि (SE_m)	मध्यमानों का अन्तर (D)	क्रान्तिक अनुपात मान (C.R.)	सार्थकता स्तर एवं सारिणी मान
1.	छात्र	50	203.68	23.63	4.84	7.26	1.50	0.05 सार्थक नहीं
2.	छात्राएँ	50	210.94	24.76				

अवकलित CR का मान = 1.50

48 आवृत्ति अंश (*df*) पर 0.05 सार्थकता स्तर का सारणी मान–2.01

उपर्युक्त सारणी के अवलोकन से स्पष्ट है कि CR का परिगणित मान 1.50 है, जो कि क्रान्तिक अनुपात के द्विपुच्छीय परीक्षण के लिए 0.05 सार्थकता स्तर के सारणीय मान 2.01 से कम है। तथा 0.05 सार्थकता स्तर पर भी CR का परिगणित मान असार्थक है। अतः शून्य परिकल्पना (H_{04}) स्वीकृत की जाती है। इस प्रकार सारणी मान से स्पष्ट है कि माध्यमिक स्तर के शहरी क्षेत्र के छात्र–छात्राओं की सामाजिक परिपक्वता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। परिणामतः कहा जा सकता है कि माध्यमिक स्तर पर शहरी क्षेत्र के छात्र–छात्राओं में सामाजिक परिपक्वता में समानता है।

5. माध्यमिक स्तर के ग्रामीण क्षेत्र के छात्र–छात्राओं की सामाजिक परिपक्वता का अध्ययन–

H_{05} माध्यमिक स्तर के ग्रामीण क्षेत्र के छात्र–छात्राओं की सामाजिक परिपक्वता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

सारणी सं0 5

माध्यमिक स्तर के ग्रामीण क्षेत्र के छात्र–छात्राओं की सामाजिक परिपक्वता का मध्यमान, मानक विचलन, मानक त्रुटि एवं क्रान्तिक–अनुपात

क्र. सं.	लिंग	संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (S.D.)	मानक त्रुटि (SE_m)	मध्यमानों का अन्तर (D)	क्रान्तिक अनुपात मान (C.R.)	सार्थकता स्तर एवं सारिणी मान
1.	छात्र	50	205.46	33.08	5.58	3.56	0.64	0.05 सार्थक नहीं
2.	छात्राएँ	50	201.90	21.57				

अवकलित CR का मान = 0.64

48 आवृत्ति अंश (*df*) पर 0.05 सार्थकता स्तर का सारणी मान–2.01

उपर्युक्त सारणी के अवलोकन से स्पष्ट है कि CR का परिगणित मान 0.64 है, जो कि क्रान्तिक अनुपात के द्विपुच्छीय परीक्षण के लिए 0.05 सार्थकता स्तर के सारणीय मान 2.01 से कम है। तथा 0.05 सार्थकता स्तर पर भी CR का परिगणित मान असार्थक है। अतः शून्य परिकल्पना (H_{05}) स्वीकृत की जाती है। इस प्रकार सारणी मान से स्पष्ट है कि माध्यमिक स्तर के ग्रामीण क्षेत्र के छात्र–छात्राओं की सामाजिक परिपक्वता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। परिणामतः कहा जा सकता है कि माध्यमिक स्तर पर ग्रामीण क्षेत्र के छात्र–छात्राओं में सामाजिक परिपक्वता में समानता है।

निष्कर्ष–

प्रस्तुत अध्ययन में निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुये–

1. माध्यमिक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों की सामाजिक परिपक्वता एक–दूसरे के समान है।
2. माध्यमिक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के छात्रों की सामाजिक परिपक्वता एक–दूसरे के समान है।
3. माध्यमिक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के छात्राओं की सामाजिक परिपक्वता एक–दूसरे के समान है।
4. माध्यमिक स्तर के शहरी क्षेत्र के छात्र एवं छात्राओं की सामाजिक परिपक्वता एक–दूसरे के समान है।
5. माध्यमिक स्तर के ग्रामीण क्षेत्र के छात्र एवं छात्राओं की सामाजिक परिपक्वता एक–दूसरे के समान है।

निष्कर्षतः क्षेत्र के आधार पर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के सामाजिक परिपक्वता में अन्तर नहीं पाया गया। इसका कारण यह हो सकता है कि माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थी किशोरावस्था में होते हैं और वे समाज में अपनी भूमिका बनाने की कोशिश करते हैं। प्राप्त परिणाम की पुष्टि आलम, मो0 महमूद (2016) के अध्ययन के निष्कर्ष में छात्र एवं छात्राओं के सामाजिक समायोजन एवं सामाजिक परिपक्वता के मध्य सार्थक अन्तर पाया गया। सिंह, धर्मेन्द्र कुमार (2018) के परिणाम उच्च भिक्षा स्तर के प्रतिभा ाली शहरी छात्र एवं छात्राओं के सामाजिक व्यवहार में कोई सार्थक अन्तर नहीं है अर्थात् दोनों शहरी छात्र एवं छात्राओं के सामाजिक व्यवहार में समानता पायी गयी। गिर व शर्मा (2006) ने

9–12 वर्ष के ग्रामीण क्षेत्र के छात्र एवं छात्राओं की सामाजिक परिपक्वता की तुलना की। उन्होंने पाया, कि इस वर्ष के सभी विद्यार्थियों में सामान्य स्तर की सामाजिक परिपक्वता पाई गई।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- आलम, मो0 महमूद (2016). सोशल एडजेस्टमेन्ट एण्ड सोशल मैच्युरिटी एस प्रेडिकेटर्स ऑफ ऐकेडमी एचिवमेन्ट एमंग एडोलसेन्ट्स, इण्टरनेशनल जर्नल ऑफ इन्फार्मेटिव एण्ड फ्चूरिस्टिक रिसर्च, वाल्यूम–3, इश्शू–12, पृ0 4495–4507
- शर्मा श्वेता एवं गिर सोफिया (2006). सेक्स डिफरेन्स इन सोशियल मेच्यूरिटी, *साइकोलिंग्वा*, वाल्यूम–36।
- सिंह, धर्मेन्द्र कुमार (2018) ने उच्च शिक्षा स्तर पर प्रतिभाशाली छात्रों के नैतिक निर्णय एवं सामाजिक व्यवहार तथा शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन, लघु शोध प्रबन्ध, राजा हरपाल सिंह पी0जी0 कालेज, सिंगरामऊ, जौनपुर।
- सिन्हा, बनिता (2014). उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर संवेगात्मक बुद्धि, संवेगात्मक परिपक्वता एवं सामाजिक परिपक्वता के प्रभाव का अध्ययन, पी–एच.डी. शोध प्रबन्ध, पं0 रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर (छ.ग.)
- त्रिपाठी एवं सिंह (2016). रीवा संभाग में हाई स्कूल स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के सामाजिक व्यवहार का उनकी भौक्षणिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन, *इण्टरनेशनल जर्नल ऑफ एडवांसड् एजुकेशन रिसर्च*, वॉ0 1, इश्शू–5, पृ0 48–50
- त्रिवेदी, रश्मि (2017). माध्यमिक विद्यालय के किशोर विद्यार्थियों के व्यक्तित्व पर मूल्य के प्रभाव का अध्ययन, शोधयतन–ए.आई.एस.ई.सी.टी. यूनिवर्सिटी जर्नल, वॉ0 4, इश्शू–8, पृ0 770–772